AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

चतरा जिले में पर्यटन का वर्त्तमान स्वरूपः एक भौगोलिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत
एवं
पंकज कुमार
सहायक प्रध्यापक
भूगोल विभाग
भद्रकाली कॉलेज, इटखोरी
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

पर्यटन वर्तमान समय में मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ्य का प्रमुख आधार है। प्रस्तुत शोध पत्र में झारखण्ड राज्य के चतरा जिले में वर्तमान के पर्यटन स्वरूप को दर्शाया गया है। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य चतरा जिले में पर्यटन के वर्तमान स्वरूप एवं उनकी संभावनाओं का पता लगाना है। इस शोध पत्र को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का सहारा लिया गया है। प्राथमिक आँकड़ों में अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है जबकि द्वितीयक आँकड़ों के अंतर्गत सरकारी एवं गैर–सरकारी विभागों से प्राप्त आँकड़ों को शामिल किया गया है। इस प्रपत्र से यह स्पष्ट पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावना है क्योंकि यह क्षेत्र उत्तर की ओर से झारखण्ड का प्रवेष द्वार कहा जाता है। साथ ही यहाँ घने जंगल, प्राकृतिक स्वरूप एवं विभिन्न नदियों और अनेक छोटे–छोटे पहाड़ों का घर यहाँ की प्राकृतिक छटा मनोहारी है। यह एक क्षेत्र है जहाँ भौतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक पर्यटन का समागम देखने को मिलता है। यहाँ वर्तमान समय में माँ भद्रकाली मंदिर, कौलेष्वरी पहाड़ी एवं मंदिर, गोवा जलप्रपात, खैवा जलप्रपात, कुंदा किला, मलुदाह जलप्रपात, लावालौंग वन्य जीव अभ्यारण्य, तमासीन जलप्रपात जैसे प्रमुख पर्यटन स्थल है।

मुख्य शब्द

मनोरंजन, भौतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक धरोहर, आकर्षण, पर्यटन प्रभाव.

प्रस्तावना

पर्यटन का भूगोल विषय में अपना विषय महत्व हैं। यह माना जाता रहा है कि पर्यटन की प्रक्रिया का मानव की उत्पत्ति के साथ ही प्रारंभ हो गया था। मानव सभ्यता का उदय ही प्राकृति के साथ हुआ है जिससे यह स्पष्ट पता चलता है कि मानव और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। प्राचीन काल में पर्यटन शब्द का प्रयोग उच्च वर्गों के लिए होता था। वास्तव में धनी वर्ग एवं मध्यम आय वर्ग के लोग जो मनोरंजन या आनंद के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान निरंतर निश्चित समय के लिए भ्रमण या यात्रा करते थे। टूरिज्म शब्द की उत्पत्ति टूर शब्द से हुई है जो लैटिन भाषा के टर्नर्स से लिया गया है जिसका अर्थ एक चक्र या पहिया घूमना है। (पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन, बंसल

सुरेश चंद्र, पेज नंबर 1)

वास्तव में पर्यटन का अर्थ जब कोई या तो अकेले या सगे–संबंधी के साथ अपने स्थान से 24 घंटा या अधिकतम एक माह के लिए अन्य क्षेत्रों की ओर जाकर पुनः लौट आते हैं तो उसे पर्यटन कहा जाता है। (ठाकुर, दीनानाथ, पेज नंबर– 160, वॉल्यूम–12)

पंडित जवाहरलाल नेहरू का कहना है कि "पर्यटन परस्पर समझबुझ, व्यापक दृष्टिकोण तथा मित्र भावना को जागृत करना है, यह सब आज की समय की आवश्यकता है। "पर्यटन एक गतिशील स्थिर एवं अनुवर्ती तत्व है, जिसमें यात्रा की विशेष लक्ष्य, स्थल इसके ठहराव एवं भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक पहलुओं का संबंध होता है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO)

"पर्यटन में अवकाश, व्यापार एवं अन्य उद्देश्यों के लिए अधिकतम एक वर्ष तक के समय तक अपने सामान्य परिवेश से बाहर के स्थानों पर यात्रा करने तथा रहने वाले व्यक्तियों की गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।"

सेंट अगस्टिन का यह कथन है कि "विश्व एक पुस्तक है और जो लोग यात्रा नहीं करते हुए इसका केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते हैं। वास्तव में यह कथन यात्री की भावना को बताता है।"

वास्तविक रूप में यह देखा जाए तो पर्यटन मानव के आवागमन से संबंधित है। पर्यटन के दायरे में पर्यटक को एक यात्री के रूप में देखा जाता है। 1800 ईस्वी में सेमुअल पेगी (Samule Pegge) ने यात्री के लिए प्रथम बार पर्यटन शब्द का प्रयोग किया था। बाद में 1811 ईस्वी में इंग्लैंड की स्पोर्टस पत्रिका ने इस शब्द का प्रयोग किया। नील लीपर (Neil Leiper) के अध्ययनों से पता चलता है कि पर्यटक एवं पर्यटन शब्दों का प्रयोग 16वीं शताब्दी के पूर्व नहीं किया गया था, बल्कि पर्यटन शब्द एक परिवार के नाम से उदित हुआ।

चतरा जिले में पर्यटन के व्यापक संभावना है परंतु यह सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक व्यवस्था के कारण विकास नहीं हो पाया है। यह झारखंड का पिछड़ा जिला है। यह प्राचीन काल से नक्सलवाद एवं उग्रवादी की समस्या देखने को मिल रहा है, इसलिए यहां विकास नहीं देखा गया, परंतु वर्तमान परिदृश्य में यहां का स्वरूप बदला है। यहां के प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पारिस्थितिकी पर्यटन क्षेत्र की संभावना बढ़ोतरी हुई है। लोग यहां काफी मात्रा में घूमने या यात्रा करना पसंद करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र झारखंड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल का प्रवेश द्वार के नाम से जाना जाता है। चतरा जिले की स्थापना हजारीबाग जिले से अलग होकर 28 में 1991 ईस्वी में हुई थी। अध्ययन क्षेत्र में निर्देशांक 23040′43′′ – 24051′16′′ उ० अक्षांश से 84028′15′′ – 8503′16′′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 3689.06 वर्ग किलोमीटर है जबकि समुद्र तल से इसकी औसत ऊंचाई 427 मी (1401 फीट) है। चतरा जिले के भौगोलिक स्थिति के आधार पर पूर्व की ओर हजारीबाग जिला, पश्चिम में पलामू ,दक्षिण में रांची जिला तथा दक्षिण प० में लातेहार एवं उत्तर में बिहार राज्य के गया जिला शामिल है। भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 1042886 है, जिसमें पुरुष 533935 और 508951 महिला शामिल है। जिले की कुल जनसंख्या घनत्व 280, लिंगानुपात 953 तथा शिशु लिंगानुपात 937 है। अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख पर्यटन क्षेत्र मां भद्रकाली मंदिर, कौलेश्वरी पहाड़ एवं मंदिर, तमासिन जलप्रपात, बोरिया जलप्रपात, कुंदा किला, लावालोंग वन्य जीव अभ्यारण, मालुदा जलप्रपात, खैवा जलप्रपात, गोवा जलप्रपात, चुंदुरू धाम, कुननिया माता मंदिर, बक्सा डैम, बालबाल दुआरी, हरियो खाद एवं माता स्थान प्रमुख है।

(स्रोतः www.chatra.nic.in.)

उद्देश्य

प्रस्तुत पत्र का प्रमुख उद्देश्य चतरा जिले में वर्तमान पर्यटन स्वरूपों को जानना एवं संभावनाओं का पता लगाना।

शोध विधितंत्र

प्रस्तुत शोध को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का सहारा लिया गया हैं। प्राथमिक आँकडों में अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है साथ ही वर्णनात्मक स्वरूप का प्रयोग किया गया है।

विवेचना (चतरा जिले में पर्यटन स्वरूप)

चतरा जिला झारखंड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल का अभिन्न हिस्सा है। चतरा जिला झारखंड का प्रवेश द्वारा कहा जाता है। इस प्रवेश द्वार में कई पिकनिक स्पॉट और फव्वारे, झरने और वनस्पतियाँ एवं जीव देखने को मिलते हैं। वर्तमान जिला हजारीबाग जिले के उपविभाजन के रूप में जाना जाता है, इसकी स्थापना 1991 में की गई थी। चतरा जंगलों से घिरा और हरियाली से भरपूर है। यहां खनिज के साथ कोयला का भरपूर मात्रा पाया जाता है। चतरा जिले के पास अपना शानदार अतित एवं प्रसिद्ध ऐतिहासिक विरासत और ऐतिहासिक प्रगति के विचित्र असंतोष का मूकदर्शक है।

चतरा जिला में पर्यटन विकास हेतु निम्न तत्वों का विशेष योगदान हैः

1. दृश्य स्थलों का प्राकृतिक सौंदर्य।
2. दृश्य स्थलों का आकर्षण।
3. परिवहन तकनीक का विकास।
4. सुरक्षा की सुविधा।
5. आवास की सुविधा।
6. खान–पान की सुविधा।
7. स्वच्छता की व्यवस्था।
8. लोगों की आय में अतिरिक्त वृद्धि।
9. शैक्षिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता।

चतरा जिला में वर्तमान समय में प्रमुख पर्यटन स्थल

1. मां भद्रकाली मंदिर (इटखोरी)

यह चतरा के मुख्य शहर से 35 किलोमीटर पूर्व की ओर और 16 किलोमीटर चौपारण का पश्चिमी जीटी रोड से जुड़ा है। यह इटखोरी ब्लॉक मुख्यालय के भद्रकाली परिसर से दूर पहाड़ी और जंगल से घिरी महानद (महाने) नदी के तट पर स्थित है। यहां एक जलाशय है जिसकी अलौकिक प्राकृतिक सुंदरता है जिसे लोग कार्तिक पूर्णिमा के छठ के बाद इसकी शाश्वत सुंदरता को देखने के लिए आते हैं।

पवित्र महाने (महानद) एवं बक्सा नदी के संगम पर अवस्थित इटखोरी मां भद्रकाली मंदिर परिसर तीन धर्म का संगम स्थल है। रांची से 150 किलोमीटर दूर इटखोरी से सनातन, बौद्ध एवं जैन धर्म का समागम हुआ है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा वर्ष 2011–12 तथा 2012–13 में की गई पुरातात्विक खुदाई के दौरान कई पुरातात्विक साक्ष्य सामने आए हैं। पुरातत्व विभाग ने यहां नवमी एवं दसवीं शताब्दी काल में मंदिर–मठ का निर्माण की पुष्टि की हैं।

सनातन धर्मावलंबियों के लिए यह पावन भूमि मां भद्रकाली तथा सहस्र शिवलिंग महादेव के सिद्ध पीठ के रूप में अस्था का केंद्र हैं। वहीं बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए भगवान बुद्ध की तपोभूमि के रूप में आराधना एवं उपासना का स्थल हैं। ऐसा माना जाता है कि शांति की खोज में निकले युवराज सिद्धार्थ ने यहां तपस्या की थी उस वक्त उनकी मां उनके वापस ले जाने आई थी लेकिन जब सिद्धार्थ का ध्यान नहीं टुटा तो उनके मुख से "ईतखोई" षब्द निकला जो बाद में इटखोरी में बदल गया। जैन धर्मावलंबियों ने जैन धर्म के दसवें में तीर्थकर भगवान शीतल नाथ स्वामी की जन्म भूमि की मान्यता दी हैं। प्राचीन काल में तपस्वी मेघा मुनि ने अपने तप से इस परिसर को सिद्ध करके सिद्ध पीठ के रूप में स्थापित किया था। भगवान राम के वनवास तथा पांडवों के अज्ञातवास की पौराणिक धार्मिक कथाओं से मां भद्रकाली मंदिर परिसर का जुड़ाव रहा है। पुरातात्विक दृष्टिकोण से यह काफी महत्वपूर्ण हैं।

2. कौलेश्वरी पहाड़ एवं मंदिर (हंटरगंज)

समुद्र तल से 1750 फीट की ऊंचाई पर स्थित हंटरगंज प्रखंड में 6 किलोमीटर दूर स्थिति ख्याति प्राप्त मां कौलेश्वरी मंदिर परिसर वैदिक काल से मान्यता प्राप्त तीर्थ स्थल हैं। यहां पहाड़ की चोटी पर तीन धर्म का समागम हुआ हैं। इसे सनातन, बौद्ध एवं जैन धर्म का संगम स्थल माना जाता हैं। महाभारत काल में यह स्थल राजा विराट की राजधानी थी। धर्म परायण राजा विराट ने ही माँ कालेश्वरी की प्रतिमा को यहां स्थापित किया था, तब से लेकर आज तक मां कालेश्वरी की प्रतिमा यहां विराजमान है। महाकाल एवं पुराण काल से भी इस पवित्र स्थल का रिश्ता जुड़ा हुआ है। सनातन धर्मावलम्बी पूजा–अर्चना के साथ विवाह एवं बच्चों का मुंडन, जनेव संस्कार आदि यहां सदियों से करते आ रहे हैं। बौद्ध धर्मावलम्बी के लिए कौलेश्वरी पहाड़ भगवान बुद्ध की तपोभूमि के साथ मोक्ष प्राप्ति का पवित्र स्थल माना जाता है।

तीर्थ यात्रा एवं भौगोलिक पर्यटन के लिए दृष्टि से यह प्रसिद्ध है। यह पहाड़ भौगोलिक दृष्टि से छोटानागपुर

पहाड़ का अभिन्न अंग है साथ ही इसका निर्माण गोंडवानालैंड के उत्तर की ओर संचालन से छोटानागपुर हिस्से के दबाव से निर्मित हुआ है। वास्तव मे यह ज्वालामुखी पर्वत है। इसका प्रमाण इसके मध्य में स्थित काल्डेरा अथवा सरोवरनुमा भाग से स्पष्ट पता चलता है। ऐसा भूगोलवेत्ता मानते हैं कि जब ज्वालामुखी का उद्‌गार शांत पड़ गया था तो कालांतर में इसके मुख में विशाल धसांव हुआ एवं क्रेटर का निर्माण हो गया। जिससे आज भी अनेक रासायनिक पदार्थ का निष्कासन हो रहा है जिसके परिणाम स्वरुप एक झील का निर्माण हुआ।

यहाँ हर साल दिन वर्मा, थाईलैंड, श्रीलंका, ताइवान जैसे तमाम देशों के लोग काफी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं।

3. तमासिन जलप्रपात (कान्हाचट्टी)

यह चतरा जिले के कान्हाचट्टी प्रखंड से 32 किमी० उत्तर में स्थित है। तमासिन जलप्रपात झारखंड एवं बिहार का ही नहीं बल्कि घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए भी स्वर्ग है। तमासिन जैसे अनूप सौंदर्य झारखंड में शायद दूसरे स्थल में संभव नहीं, अपितु हर एक प्राकृतिक स्थल का अपना सौंदर्य हैं। यही अनुपम सौंदर्य की वजह से ही यहां एक बार आने वाले पर्यटक बार–बार आने की इच्छा रखते हैं। सामान्य भू स्थल से लगभग 200 फीट ऊंचाई से कई चट्टानों से टकराते हुए जलकन जमीन पर गिरकर अद्‌भुत मनोहारी छटा उत्पन्न करते हैं। चारों ओर हरे भरे पेड़–पौधे के बीच कलकल–छलछल वह निनाद करते हुए गिरने वाला जलप्रपात तमासिन की प्राकृतिक शोभा को चार चांद लगा देती है।

जानकारों को मानना है कि तमासिन में मनोहारी छटा तो है, साथ ही साथ आध्यात्मिक वास भी वहां पर है। सनातन धर्मावलंबियों की आस्था जुडी हुई है, यही वजह है कि लोग उसे तमासिन मां के नाम से भी जानते हैं। हरे–भरे जंगलों और सुंदर दृश्यो के साथ यह झरना एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है। तामसीन नदी लगभग 30 मीटर से नीचे गिरती हुई तमासिन झरना बनाती है, इस झरने का सबसे अच्छा दौर मानसून के मौसम में होता है। जब पानी का प्रवाह चमर पर होता है और आसपास के जंगल अपने सबसे हरे–भरे रंग में होते हैं। तमसीन झरने के आसपास का क्षेत्र विविध वनस्पतियों और जीवों का घर है। झरने के आसपास के जंगल हिरण, बंदर और विभिन्न पक्षी प्रजातियों जैसे वन्य जीव से भरे हुए हैं। पर्यटक जंगल में प्रकृति की सैर का आनंद ले सकते हैं और कुछ जानवरों को उनके प्राकृतिक आवास में देख सकते हैं। तमासिन जलप्रपात में बड़े–बड़े जलगर्तिका, क्षिप्रिका और अवनमन कुंड देखने को मिलते हैं।

4. बोरियो जलप्रपात

यह जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूरी पर उत्तर में स्थित चतरा का एक और महत्वपूर्ण सौंदर्य स्थल है जिसमें से 10 किलोमीटर वाहन द्वारा जाया जा सकता है एवं 2 किलोमीटर पैदल के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। यह सड़क मार्ग कच्चा है। इतनी ऊंचाई से पानी गिरते हुए देखना स्वर्ग के सामने सुख की अनुभूति कराता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों जैसे बसंत चट्टानी दीवारों के खिलाफ सफेद किरणों को धूमिल कर रही है, ऐसा लगता है जैसे वह सूरज के नीचे बौछार स्नान का आनंद ले रहा है।

5. मालुदा जलप्रपात

यह जिला मुख्यालय से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर एक सुंदर झरना है। चतरा के पश्चिम में 5 किलोमीटर मोटर योग्य और 3 किलोमीटर पैदल यात्रा करनी पड़ती है। यहां पानी लगभग 50 फीट की ऊंचाई से गिरता है। यह झरना काफी मनोरम दृश्य प्रकट करता है।

6. खैवा जलप्रपात

चतरा जिला के सदर प्रखंड के कटिया पंचायत में स्थित खैवा जलप्रपात के प्रकृति ने खुलकर सजाया व सवांरा है। खैवा धरू स्थित गांव में तकरीबन दो किलोमीटर पैदल चलने के बाद यहां की अनुपम छटा दिखाई देती है। इस प्रपात में प्राकृतिक सौंदर्य की अद्‌भुत छटा एवं सौंदर्य है, लेकिन मूलभूत सुविधाओं के नहीं होने के कारण आज भी यहां मनोरम स्थल पर्यटन के लिए अनछुआ है।

7. गोवा जलप्रपात

यह मुख्यालय से 6 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है जिसमें 4.5 किलोमीटर तक मालुदा के रास्ते से गाड़ी से, जबकि 1.5 किलोमीटर पैदल पहुंचा जा सकता है। यहाँ 30 फीट की ऊंचाई से जलाशय से जल गिरता है। तीनों तरफ चट्टान है लेकिन बीच में एक जलाशय है।

8. लावालॉन्ग वन्य जीव अभ्यारण्य

इस अभ्यारण की स्थापना बिहार सरकार की अधिसूचना 49/48/444– F- Date 15/07/1978 को लिया गया था जिसमें 82 गांव अभ्यारण क्षेत्र के भीतर स्थित हैं। अभ्यारणय में 21 गांव मुख्य क्षेत्र में है तथा बफर जोन में 61 गांव स्थित है। अभयारण्य का क्षेत्रफल 26886.23 हेक्टेयर हैं। अभ्यारणय में पाए जाने वाले प्रमुख जानवरों में बाघ, तेंदुआ, भालू, नीलगाय, सांभर, मयूर, जंगली सूअर और हिरण हैं साथ ही सांप और पक्षियों की विविधता भी देखने को मिलती है।

9. चूंदरू धाम (टंडवा)

यह स्थान हजारीबाग और चतरा जिले के बॉर्डर पर स्थित है इसे चूंदरू खावा भी कहा जाता है। यहां भौगोलिक और धार्मिक पर्यटन का समागम देखने को मिलता है। यह स्थान रहस्यमई तथ्यों से भरा हुआ है। यह विशालकाय पत्थरों पर अनेको बड़ी–बड़ी आकृतियां के साथ ही निर्मल जल प्रवाह का संगम है। यहां नदी द्वारा पत्थरों को इस प्रकार काटा गया है मानो बड़े–बड़े कुआ हो जिसकी गहराई का पता आज तक नहीं चल पाया है। किवंदती है कि यहां मौजूद चट्टानों के बीच एक गुफानुमा गड्ढा ऐसा भी है जिसकी गहराई का आकलन आज तक कोई नहीं कर पाया है, स्थानीय निवासियों की माने तो उसे गड्ढे की गहराई के आकलन के लिए साथ खटिया की डोरी भी कम पड़ गई हैं।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सरोज कुमार सिंह का मानना है कि हारो की एक सहायक नदी द्वारा करोड़ों वर्ष की अंतराल में ग्रेनाइट, नीस चट्टानों के समूह को नष्ट किया गया है, जिसमें गढ़ों की श्रृंखला के माध्यम में घाटी बन गई है इसमें अनेक जलगर्तिका, गॉर्ज ,कैनियन का निर्माण हुआ है जिसकी गहराई का पता लगाना संभव नहीं है।

10. कुंदा किला (कुंदा)

चतरा जिले में पश्चिम 40 किलोमीटर दूर कुंदा प्रखंड में एक किला है जिसे चेरों राजाओं ने 14वीं शताब्दी में बनाया था। यह अब जीर्ण – शीर्ण हो गया है। 1886 तक यह खड़ा था। दाउद खां को इस प्रकार कब्जा करने के लिए 6 महीने तक प्रतिरोध करना पड़ा था। किला खंडहर में तब्दील होता जा रहा है, यह किला अपना पहचान खोता जा रहा है।

किले में कुछ दूरी पर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल महादेव मठ है। कुंदा का यह किला 16वीं शताब्दी का है। बुजुर्ग बताते हैं कि किले में अद्भुत संपत्ति छिपी है। किले की लंबाई 92 मीटर, चौड़ाई 52 मीटर और ऊंचाई 10 मीटर है। तीन मंजिला यह किला तीन दिशा से नदियां और पहाड़ों से घिरा हुआ है जो सैनिको की सुरक्षा दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।

उपरोक्त पर्यटन स्थलों के अलावे चतरा जिले में पर्यटन की अनेकों संभावनाएं हैं:

1. चतरा किला।
2. कुनुनिया माता मंदिर।
3. बक्सा डैम।
4. बलबल दुआरी।
5. हरिया खाद जलप्रपात।
6. चतरा वन क्षेत्र।

7. डूमर जलप्रपात।
8. महादेव मंदिर, कुंदा।
9. दुआरी जलप्रपात।
10. खायवा बनारू झरना।
11. केरिडीह झरना, चतरा।

निष्कर्ष

उपरोक्त सम्पूर्ण विवरणों से स्पष्ट होता है कि चतरा जिला में पर्यटन की वर्तमान मनोहारी छटा अनुपम सौन्दर्य को इंगित करता है। मानव सभ्यता के उदय के साथ ही मनोरंजन का स्तर भी बढ़ते गया है। इन्ही मनोरंजन में पर्यटन को शामिल किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में अनेकों पर्यटन स्थल देखने को मिलते है जिसमें माँ भद्रकाली मंदिर, कौलेश्वरी पहाड़ी एवं मंदिर, गोवा जलप्रपात, खैवा जलप्रपात, कुंदा किला, मलुदाह जलप्रपात, लावालौंग वन्य जीव अभ्यारण्य, तमासीन जलप्रपात, बोरियों जलप्रपात और चुंदुरू धाम प्रसिद्ध है। साथ ही यहाँ की मनोहारी दृश्य पर्वत, पठार, जंगल, नदियों का संगम अनोखा है, जो लोगों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ की भौतिक, सामाजिक एवं धार्मिक और ऐतिहासिक समागम नये–नये पर्यटन की सम्भावनाओं को प्रस्तुत करता है जिसमें चतरा किला, कुनुनिया माता मंदिर, बक्सा डैम, बलबल दुआरी, हरियोखाद, चतरा वन क्षेत्र, डुमर जलप्रपात, महादेव मठ कुन्दा, दुआरी जलप्रपात तथा केरिडीह झरना प्रमुख है। अतः यह स्पष्ट होता है कि चतरा जिला में पर्यटन की अपार सम्भावना है।

संदर्भ सूची

1. बंसल सुरेश चन्द्र (2019) *"पर्यटन भूगोल एवं यात्रा–प्रबंधन"* एकेडमिक प्रेस, मेरठ, उत्तर प्रदेश।
2. खत्री, हरीश कुमार (2018) *"पर्यटन भूगोल"* कैलाश पुस्तक भवन/सदन, भोपाल, मध्य प्रदेश।
3. सेन, संजय (2007) *"टूरिज्म इन नार्थ इस्ट इंडिया"* महावीर प्रकाशन, डिब्रुगढ़, असम।
4. नारायण, अभिनव (2017) *"झारखण्ड द होम ऑफ मल्टीडायमेन्सन टूरिज्म"* राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. ठाकुर, दीनानाथ (2022): "चन्दनकियारी प्रखंड में धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन कि संभावनाः एक भौगोलिक अवलोकन", हर्षवधन प्रकाशन पी.वी.टी., महाराष्ट्र इश्यू–92, वाल्यूम– 02।
6. Aas, C, Ladkin, A. & Fletcher, J. (2005) Stakeholder collaboration and heritage management. *Annals of tourism research*, 32(i), 28-48.
7. https://tourism.jzharkhand.gov.in

––==00==––